शब्द मंजरी

काव्य संग्रह

हिम्मत सिंह अरमो

अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन

शब्द मंजरी

काव्य संग्रह

हिम्मत सिंह अरमो

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश 481331

978-93-94528-82-6

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल-9009423393
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2026, **हिम्मत सिंह अरमो**
मूल्य- 200/- रूपये
मुद्रक– सोनी प्रिंटकॉम, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY H.S. ARMO

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

मैने अपनी कविता संग्रह का शीर्षक शब्द मंजरी ही क्यों रखा है? क्योंकि समाज के समक्ष अपनी बात व विचारों को शब्दों के सशक्त माध्यम से साहित्य लेखन की बहुचर्चित विधा कविता ही होती है। जिसे पढ़कर पाठकगणों को वृक्ष की मंजरी की सुगंध की भांति अपने आपको समाज की धार्मिक, राष्ट्रीय व समसामयिक घटनाक्रम से परिचय करा सके। उसे भी कुछ आत्मबोध व जानकारी की माला में पिरोकर साहित्यिक रूचि जाग्रत करने में उतना ही सफल हो सकूँ ।

अतः मुझे पूर्ण विश्वास है कि पाठकों छंद-मुक्त गद्य काव्य के रूप में लिखी सरल शब्दों की कवितायें अवश्य ही पसंद आयेगी, क्योंकि इस कविता संग्रह में कुछ कविता दिल को छू लेने वाली है जैसे स्त्री के स्वरूप, दिल की आवाज, मनमीत, अपने आदि और कुछ तीज-त्यौहार पर्व से संबंधित है पोला पर्व, कृष्ण जन्माष्टमी, कमरछट बनाम हलषष्ठी पर्व, रक्षाबंधन आदि व देशभक्ति के रूप लिये जैसे वतन, हर घर तिरंगा, बँटवारे का दर्द आदि है।

कृपया सुधी पाठकगणों से विनम्र अनुरोध है कि आपके बहुमूल्य मार्गदर्शन एवं सुझावों का हृदय से स्वागत है ताकि मैं भविष्य में अपनी साहित्यिक लेखनी, विचारों को समाज, राष्ट्रहित में विभिन्न विधा में लिख सकूँ और उनके जीवन में सकारात्मक भाव प्रस्फुटित कर सकूँ ।

इन्हीं शुभेच्छाओं का आकाँक्षी.....

हिम्मत सिंह अरमो

रायपुर (छ.ग.)

आभार

मैं अत्यंत हर्ष के साथ कहना चाहता हूँ कि नव-साहित्यकारों को एक सशक्त मंच प्रदान करने का काम को अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन वारासिवनी (म0प्र0) विगत कई वर्षों से लगातार कर रही है। इनके द्वारा समय-समय पर साहित्यकारों को मंच उपलब्ध करा, उनकी लेखनी को समाज के सामने पुस्तकीय स्वरुप प्रदान करने में अमूल्य योगदान प्रदान करती रही है। मैं इनका व प्रकाशन का हृदय से सदैव आभारी रहूंगा ।

साथ ही साथ प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से इस कविता संग्रह को तैयार करने में अपना सहयोग और प्रेरणा स्त्रोत है रमा प्रेम-शांति तेकाम बालाघाट (म0प्र0), आकाश कौशिक रायपुर (छ0ग0) व परिवार, ईष्ट-मित्रगण, मैं इन सभी को हृदय से धन्यवाद देना चाहता हूँ। इस कृति को मैं अपनी धर्मपत्नि स्वर्गीय श्रीमति चंद्रकांता अरमो के श्री चरणकमल में सम्पर्पित करता हूँ।

हृदय से धन्यवाद।

हिम्मत सिंह अरमो
रायपुर (छ.ग.)

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृ.क्र.
1.	होली	7
2.	वतन	8
3.	घर-घर तिरंगा	9
4.	बैटवारे का दर्द	10-11
5.	मै मोबाईल हूँ	12
6.	रक्षाबंधन	13
7.	समय की कीमत	14-15
8.	कमरछट बनाम हलपष्टी पर्व	16-17
9.	श्री कृष्ण-महिमा	18-19
10.	मनमीत	20-22
11.	स्त्री के स्वरूप	23-24
12.	पोला पर्व	25
13.	मौसम	26-27
14.	दिल की आवाज	28-29
15.	शिक्षा बनाम शिक्षक	30-31
16.	हिन्दी दिवस	32

होली

शीत ऋतु का चुपके से निकल जाना--
और ग्रीष्म ऋतु का हौले हौले आना ।
बंसत की बासुंती खुशबू का ढल जाना
महुआ के गदराये फूलों का महकना ।

गोप-गोपियों का बरसाने की होली में-
लठियों से पीटना रंगों का बरसाना ।
पौराणिक कथाओं में होली का रंग--
बिखरे इतिहास भी ऐसे ही बहुरंग ।

प्रकृति बिखेरे पलास के दहकते रंग--
कोयलिया सुनाये अपना मधुरिमा रंग ।
पिया मिलन की आस लिए----
परदेश गए पिया का भरे इंतजारी रंग ।

अबकी होली में मँहगाई से सराबोर--
जनता का बजट बिगड़ा हुआ शोर ।
बुरा ना मानो होली है नेता कहते--
विकास के लिए सब सहने हैं पड़ते ।

वैमनस्यता मिटाएँ बिखरें प्रेम का रंग--
रंग में भंग ना हो, दिखे देशप्रेम का रंग।
आधुनिकता के रंग में बदल गया रंग--
पाश्चात्य संस्कृति का चढ़ा है ऐसा रंग ।

अपनी संस्कृति अपना रंग है भाईचारा
मानवता मिठास रंग हो बहुत सारा ।

वतन

मेरे पूर्वजों का जहां है बसेरा--
वही धरती है, वतन मेरा ।
बचपन बीता, माटी थी माँ--
जीवन तारन का बना वो ठेरा,
वही धरा की गंध बना वतन मेरा ।
भूमंडल की धरा का हिस्सा मेरा--
भारत देश है प्यारा वतन हमारा,
अनेकानेक बसती, जहाँ संस्कृति,
ऐसा प्यारा-सा वतन है मेरा ।
मेरे वतन की प्यारी है पहचान--
नतमस्तक करता है अडिग हिमालय,
पाँव पखारे जलनिधि हिंद महासागर,
प्रकृति का अनुपम मिलता भंडार ।
विजयी विश्व तिरंगा झण्डा है प्यारा--
अविरल पावन नदियों की बहे धारा,
तटों पर हैं बसे पवित्र धाम का संसारा,
प्यार लुटाता,सद्भाव का वतन हमारा ।
आओ अपने वतन की शान में--
इसके चहुँमुखी विकास में,
ज्ञान-विज्ञान, शिक्षा का दीप जलायें,
इसकी अखंडता में मर-मिट जायें ।

हर घर तिरंगा

देश का स्वाभिमान है तिरंगा--
हर घर तिरंगा अब लहरायेगा,
आजादी की ये हमें याद दिलाआएगा ।
कितने विदेशी ताकतों ने राज किया--
उनसे लड़ाई करते कितने कुरबाँ हुए,
उन अमर शहीदों को श्रद्धांजलि देने,
हर घर तिरंगा अब फहराएगें ।
जश्न-ए-आजादी की खुशियाँ--
हर एक के दिल में जगाएंगे ,
ऐसा जोश सबमें हम लाएंगे ,
हर घर तिरंगा अब फहराएगें ।
हम-सब भारतवासी हैं--
बिना भेदभाव के, देशभक्ति में,
विश्व को एकजुटता हम दिखाएंगे ,
हर घर तिरंगा अब फहराएगें ।
आओ साथियों देश की शान में--
विश्व पटल में, आजादी का जश्न ,
अब दुगने जोश में अब मनाएंगे ,
हर घर तिरंगा अब फहराकर दिखायें ।

बँटवारे का दर्द

आजादी दिलाने कितने हुए कुरबाँ---
अंग्रेज़ हुकुमत की हुई थी बिदाई ,
खुशनुमा-सा लगा था वो दिन ,
15 अगस्त, 1947 की थी वो तारीख़।

बिना भेदभाव, देश की आजादी में--
हरेक वर्गों, कस्बों से लेकर शहरों तक,
किशोर, युवा, महिला-पुरुष व बुजुर्ग,
सबके त्याग, बलिदानी की है वेदी ।

उस दर्द भरे पलों की विभीषिका--
जब देश का आपसी बँटवारा हुआ,
अपनों का अपने से गमगीन जुदाई,
था बहुत,धरा से बिछुड़ने का गम ।

अजीब सा दिखता था वो मंज़र--
हिन्दुओं-मुसलमानों,भारत-पाकिस्तान
इस शब्द की व्यथा की मार्मिक धारा,
कलुष सी रातें, हैवानियत मातम डेरा।

जबर्दस्ती बेदख़ली होने का सदमा--
जीते-जी मुर्दा-सा हुआ था शरीर,
जमीं का बँटवारा, भावनाएं थीं मरी,
कैसे कहें,कैसे लिखें, दर्दनाक कहानी।

परिवार,रिश्तों, माटी की गंध से--
अनायास छूटती,लुटती, बिखेरते हश्र,
मरघट-सा बना,चेहरे के हाव-भाव ,
मजहबी बँटवारा,बनीं खून की होली ।

मैं दुखित मन से यही कहूँगा---
बँटवारा- जमीं का हो या रिश्तेदारों से,
जब भी,,जिसका भी हो,कोई कारण,
जीते-जी व्यक्ति मुर्दा बन ही जाता है ।

मैं मोबाइल हूँ

टेलीफोन का बदला स्वरुप ।
तार का बेतार हुआ --
बदली दुनिया, सैटलाइट से निर्भरता ।
छोटे से लेकर बड़े तक---
मोबाइल से ,लोगों का जुड़ाव हुआ ।
हाथों में सारा संसार हुआ--
गूगल से नया चमत्कारीअवतार हुआ ।
गाँव और शहर की दूरी मिटाई--
संचार- में, अनूठा आविष्कार हुआ ।
मोबाइल के अनेकों फायदे--
किसी के लिए वरदान साबित हुआ ।
तो किसी के लिए अभिशाप हुआ--
फिर भी चाहत में ना कोई घटाव हुआ।
मैं हूँ आपका प्यारा मोबाइल--
जीवन साथी की तरह रहे साथ-साथ ।
सबक यही है, इसकी नजदीकी से--
हरदम बचना है,तभी तो सेहत बचेगा।
आओ मोबाइल की उपयोगिता जानें--
सब जानकारी का है अमूल्य खजाना।
मैं मोबाइल हूँ---
मेरी सुरक्षा का सदा ख्याल रखना ।

रक्षाबंधन

भाई-बहनों के प्यार का त्यौहार है--

संबंध संस्कार का एक व्यवहार है ।

सावन की पूर्णिमा के दिन आता--

मिठाईयों-उपहार की खुशी दे जाता--

भाई कहीं भी हो, बहन का प्यार मिलता ।

मुँह बोले भाई भी अपना फर्ज निभाते

बहना जिसे माना,सम्मान वो करते ।

सामाजिक रिश्तों की पवित्रता है--

अमीर-गरीब सब,दिल से मनाते ।

टूटते-बिखरते रिश्तों की मर्यादा रखे--

रक्षाबंधन है ऐसा अनमोल त्यौहार ।

आओ इस की पर्व की महत्ता जाने--

परायों को भी प्यार से जोड़ दे ।

समय की कीमत

समय बहुत बलवान होता है--
इसकी कीमत को पहचाने ।
होती है, समय के साथ-साथ ।
बुद्धि की कीमत होती है सदा--
गुणीजनों, विद्वजनों के साथ ।
गुणवत्ता युक्त वस्तुओं का मोल--
हमेशा ही अच्छी कीमत में होती है ।
विचारावान, चिंतनशील व्यक्ति ही--
अपने विचारों की कीमत जानता है ।
पानी की कीमत तो --
एक प्यासा व्यक्ति ही जानता है ।
एक भूखे व्यक्ति से जाने--
भोजन की कीमत,मिलने पर क्या है-?
बरसात में कीमत होती है सदा--
यदि है आपके पास एक छतरी ।
मुसीबतों में जो सहारा दे --
उसकी कीमत, सहारा लिया जानता ।
अपनी कीमत आँकलन का मापदंड--
आपके बेहतर हुनरमंदी दिखाने से है।

ऐसी बोली, बोलिए--

ताकि आपकी, अलग पहचान बने ।

समाज में आपकी इज़्ज़त ही --

एक बेहद कीमती नगीना है ।

हर एक व्यक्ति का सामाजिक मूल्य--

उसके बेहतर चरित्र से होता है ।

अपने व्यक्तित्व की पहचान बनाने--

आन्तरिक ज्ञान को वैसा ही निखारे ।

मानवीय व्यवहार से बढ़कर--

समाज में,किसी चीज की कीमत नहीं।

स्त्री का पवित्र गहना, स्त्रीत्व है--

जिसका पैमाना मात्र चरित्र होता है।

इंसानियत का फर्ज निभाना भी--

अच्छे व्यक्तित्व की कीमत बढ़ाती है ।

कीमत की कीमत जिसने भी जाना है-

जीवन का मोल क्या है, उसने जाना है।

कमरछट बनाम हलषष्ठी पर्व

कमरछट व्रत महिलायें ही रखतीं हैं--
भाद्रपद कृष्णपक्ष षष्ठीतिथि को होता,
बलरामजी का जन्मदिन पर्व भी होता,
इस दिन छठ माता की पूजा करते हैं ।
संतानों की सुरक्षा, समृद्धि हेतु होता--
व्रत में महुआ डाली की दातून, महुआ
पत्ते का पत्तरी-दोनॉ ,महुआ का फूल,
कांसी घास डाल, पलास, झरबेरी होती।

पूजा के लिए महिलायें व्रत रखतीं हैं--
स्नान कर, आँगन में झरबेरी, पलास व
कांसी की टहनी लगाकर पूजा करतीं,
छठी माता चित्र के सामने, उस पर ,
सात अनाजों का मेल "सतनजा" और
दही-तिन्नी के चाँवल भोग लगातीं हैं,
फिर बैठकर हलषष्ठी की कथा सुनते।

व्रत में हल की पूजा करते हैं और--
बिना हल जोते पसहर का चाँवल का,
भोजन, छ: प्रकार की भाजी, महुआ का फूल भुना, लाई,
भैंस के दूध-दही का सेवन, फलों का सेवन वर्जित है ।

पूजा के लिए एक चौकी-पाटे पर --
गौरी-गणेश, कलश रखकर, हलषष्ठी-
देवी मूर्ति की पूजा मिलकर करतीं ,
खिलौने भंवरा, बाटी भी रखते हैं ।

इस व्रत में तामसिक भोज्य वर्जित है- पर,
सब्जी-आलू , दही आलू , जीरा-
आलू, आलू टमाटर, आलू पकौड़ी,
कद्दू की सब्जी, हलवा, खट्टे में बना,
शकरकंदी हलवा, टिक्की खाते हैं ।
कमरछट को हलषष्ठी, हरछठ भी--
कहीं-कहीं कहते, कुछ राज्यों में ही,
महिलायें इसे उत्सुकता से हैं मनाते,
अपने परंपराओं का निर्वाह करते ।

श्री कृष्ण-महिमा

श्री कृष्ण-महिमा है अपरम्पपार --
ब्रजवासियों के हैं रखवाले,
कष्ट निवारक, लीलाधारी श्याम बिहारी,
महाभारत में, पाण्डवों के थे, सिरमौर ।

दुष्टों का बाल्यावस्था में किया संहार--
थे बड़े नटखट और माखनचोर भी,
गोपियों संग, रास लीलायें भी करते,
गोवर्धन पर्वत उठाते, ऐसे रक्षक हैं ।

गोकुलनाथ, द्वारकाधीश के स्वामी--
सुदामा संग, गहरी प्रीत है निभाई,
भगवद् गीता के महानायक हैं,
अनेक नामों के, नामधारी जो बने।

हे राधे-कृष्ण, वृन्दावन के पालनहार--
बंसी बज्जिया, रास रच्चिया गोपला,
हलधर के हो तुम, छोटे लाला,
शेषनाग के ऊपर, नाच नच्चिया,
भक्तों के लिए हो, प्यारे परमेश्वर ।

आपकी महिमा है, जगत् में न्यारी--
सभी के दिलों में बसने वाले,
भक्तों को, प्रेम रस में डूबोने वाले,
जाति-धर्म से ऊपर उठकर भक्त सारे।

सारे जगत में, चाहने वाले--
मीरा की भक्तिभाव था अनूठा,
द्रोपदी के मर्यादा के तुम रखवाले,
अर्जुन के बने सारथी, जीत दिलाने ।

मनमीत

तुम्ही मेरे मनमीत हो - - -
तुम्ही मेरे प्रियवर हो ,
तुम्हें पाने जग को हारा ,
पीया मैंने भक्तिरस विष प्याला ।

कहूँ मैं सबसे, तुम मेरे रखवाले- - -
तुम्ही हो मेरे मनमीत प्यारे,
लागी प्रीत मन ही मन तुझसे,
मैं तो अपना सुध-बुध खोई ।

अपनों का संग है छोड़ा - - -
और भटक रही हूँ दर-दर,
कहाँ छुपे हुए हो, मेरे मनमीत,
तुम्हारे दर्श को कब से तरस रही ।

तेरी छवि कैसी होगी--
मनमीत बन ढूंढ रही,
मुझको भी, मालूम नहीं,
ना ही कोई बता रहा ।

फिर भी डूबी हूँ, तेरे प्रेमरस- - -
क्या जादू किया है मुझ पर तुमने,
मैं तो बावरी हो गई, तेरी याद में,
इतने निर्दयी मत बनो मेरे मीत।

तुम तो जगत के दायनीधि हो -- -
तुम्ही सबकी मुरादें पूरी करते हो,
मुझ पगली को कैसे भूले हो,
तुम्ही तो मेरे दिल अज़ीज़ हो।

मुझे तुम किस रुप में---
कहाँ मिलोगे, अब तो बता दो,
अब अपनी ज़िद छोड़ दो,
तुम ही तो, मेरे मनमीत हो।

मुझसे क्या नाराज़गी है--
दिलदार बन, अब तो बता दो,
तुम्ही बताओ, तुम कैसे मानोगे,
अब तो बता दो, बहुत हो चुका है ।

मैं अब सब कुछ छोड़कर ---
शरणार्थी बन, तेरे शरण में आई,
थोड़ी सी जगह, अपने दिल में दे दो,
मुझ दुखियारी तुम ही एक सहारा ।

मैं तुम्हें क्या नाम दूँ--
किस नाम से पुकारा करूँ,
मेरी इतनी सी, फरियाद तो सुनो,
मेरी तपस्या, मेरी मुराद होगी पूरी ।

तुम्ही तो मेरे मनमीत हो--
तुम्ही मेरे दिलवर हो,
चाहने वालों को, कभी मायूस ना करें,
तुम ही तो हो, इस जग के रखवाले ।

स्त्री के स्वरूप

स्त्री है, संसार की एक अनोखी कृति--
माँ, पत्नी, बहन और है पुत्री नाम,
स्वरूप होता, पर रिश्ता है अलग ही ।
स्त्री ही है देवी स्वरूपा--
ये हैं, कष्टहरनी व दुष्टों की विनाशनी ,
और संरक्षक रूपा हैं सिंहवाहिनी ।
ज्ञानदात्री और हैं इसकी भंडारी---
और हैं हंसवाहिनी, वीणावादिनी,
विनयशील, प्रकाशक जीवनदायनी ।

नारायणी, नारीत्व, सतीत्व, त्यागिनी--
गृहिणी और हैं परिवार की संरक्षणी,
सम्पर्पण, त्याग, उदारता की पुजारनी ।
पतिव्रता, सहगामी हूँ मैं देवी तुल्या--
मैं ही लक्ष्मी, उमा भारती व हूँ काली,
सब रूपों से, मैंने जगत् को सजाया ।
आज अमानवीय व्यवहारों से--
स्त्री की अस्मिता क्यों लुट रही,
लोग नैतिकता क्यों आज भूला रहे ।

कानून व सामाजिकता का डर नहीं --
दानववृति मानवों का कोई वजूद नहीं,
कठोर सजा हो और ये घृणा काबिल।
स्त्री का हरदम, हर रूप में--
करना होगा, उसका उचित सम्मान,
तभी रहेगी, ये धरती गुलज़ार ।
स्त्री बिन धरा की कल्पना अधूरी है--
और अधूरा-सा लगेगा, ये संसार,
बेटी बचाओगे, तभी नवकृति पाओगे।

पोला पर्व

किसानों का खुशियों से भरा पर्व--
अनाजों में जहाँ, आए गरभ,
पशुधन का बड़ा है महत्व।
बैल पोला पर्व में होता--
बैलों को नहला-धूलाकर सजाते,
उसकी ईश्वर तुल्य, पूजा करते ।
इस का आनंद बच्चे भी उठाते--
मिट्टी के नादिया की पूजा करते,
घर-घर घुमा, उपहार व पकवान पाते।
आज के दिन किसानो का होता--
बैलों की दौड़ में भाग लेते,
ठेठरी, खुरमी, चाकोली नमकीन होता।
बाजार भी खूब सजते--
मिट्टी के खिलौने बिकते,
चकिया, हँडिया, चूल्हा बच्चे लेते ।
आमजन भी इस पर्व को मनाते--
मिट्टी या लकड़ी के नादिया लाते,
पकवानों का भोग, पूजा भी करते ।
तेलांगना, कर्नाटक,महाराष्ट्र--
मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ में पर्व,
भाद्र अमावस्या को हर्ष से मनाते ।

मौसम

सूरज, चाँद और सितारे--
हैं ये जगत के रखवाले,
सुबह-शाम, रात के पहरेदार ।
हर मौसम की कहानी तुमसे--
तुम रूठो तो कयामत आये,
तुम हँसे तो बहार छाये ।
ये कैसा नजारा है प्रकृति का--
कहीं धूप तो, कहीं छाँव है,
कहीं गर्मी तो, कहीं पानी की फुहार है।

प्रकृति को समझने वाले--
मौसम के रूख को पहचानते,
दिन व रात के हिसाब को जानते ।
खगोलीय घटना के पारखी--
बखूबी मौसम का मिज़ाज जानते,
हर पल का हिसाब लिखकर बताये ।
काश मौसम एक सा होता--
जीवों-वनस्पति का जीवन भी,
उसी तरह उनका बसेरा होता ।

मौसम के बदलते मिज़ाज पर ---

रचनाकार, शायर, गज़लकार, गीतकारों,

ने, कितनी नजाकत से रचना की है ।

मौसम का बदलाव भी--

किसानों में खुशियों से भरा पैगाम है,

भरपूर फसल होगी अंदाजा हैं लगाते।

मानव का जीवन भी एक--

मौसम की तरह बदलते रहते,

कभी खुशी तो, कभी गम भी होते ।

मौसम ही प्रकृति का अनुपम उपहार-

कभी गर्मी, कभी बरसात और ठण्ड,

तीनों मौसम धरा के बदलते हैं रंग ।

दिल की आवाज़

जीवन की आपाधापी में--
हैं लोग कितने परेशान,
दिल की आवाज़ सुनाई देती है,
तू क्यों करता है, इतनी भागम-भाग ।

पेशे के तनाव से जूझते रहते--
दिल की धडकनें तेज हो जाती,
दिल की आवाज़ क्या सुनेगा,
दिमाग में कर्फ्यू लग जाता है ।

मँहगाई के इस दौर में--
मियां-बीवी दोनों ही कमाते,
फिर भी आर्थिक तंगी का रोना रोते,
दिल की आवाज़ सुनाई भी नहीं देती।

इसी कशमकश में हूँ जिन्दगी--
दिमाग से काम लूँ या दिल से,
आपस में नोंक-झोंक हो जाती,
फिर भी दिल को भरमाते हो ।

आज आम आदमी दिल का मरीज--
दिल की आवाज़ सुनाई तो देती है,
पर, दिमाग सुन्न होने लगता है ,
जब सहारा मिले तो,खुशी भी होती ।

दिल को स्वस्थ रखने में ---
प्रातः काल घूमना भी जरूरी है,
दिल की आवाज़ सुन भी लो यारों,
कभी अच्छी बात हो ही जाती है ।

शिक्षा बनाम शिक्षक

शिक्षक ही न होते तो---
ज्ञान के अंधियारों में,
यूँही हम- तुम पड़े ही रहते।
"आ" से आदमी बना, आपने--
मुझे एक काबिल इंसान बनाया,
खुद तो, दीपक तरह जलते ही रहे
और सदा ही हमारी फिक्र करते रहे।

सादगीपूर्ण जीवन को वो जीते रहे--
हमें कीमती ज्ञान लुटाते ही रहे,
बढ़ते रहे हम आगे ही सदा,
सफल रहो, यही कामना करते रहे।
शिक्षक को तुम पद से मत आँकों--
जब जिसने भी, सबक बतलाया,
अच्छी राह जिसने भी जब दिखाया,
वही उस पल का गुरु कहलाया।

माता-पिता की बुनियादी गृह-शिक्षा--
और मिली समाज से नैतिक शिक्षा,
इसने संसार में जीने का पाठ पढ़ाया,
उसी से हर जगह पूर्ण सम्मान पाया ।

संत-महात्मा, गुरुजन व पीर-फकीर--
सभी ने हरदम समरसता ही सिखाया,
समाज से ऊँच-नीच का भेद मिटाया,
राजा हो या प्रजा सभी को बताया ।

मानवता कायम रहे, संसार में---
अमनों-शाँति का ऐसा पैगाम फैलाया,
वैमनस्यता का जहर, समाज से मिटें,
और विश्व-बन्धुत्व का भाव जगा रहे ।
भूल जाते हैं जो अपने गुरुओं को--
उनके दिये परम सत्य के ज्ञान को,
ना कभी उन्हें याद भी हैं करते,
जो सबके अज्ञानता को दूर भगाते।

जिसने भी गुरु महिमा मर्म को जाना-
उसको सर-माथे व अंतश में बसाया,
महानता का भाल-तिलक है पाया ,
संसार ने उसे अपना दिवाना बनाया ।
आओ हम-सब अपने-अपने --
गुरुजनों को कर लें दिल से याद ,
उन्होंने हमको ऐसा मुकाम दिलाया,
हम उन्हें श्रद्धासुमन, भेंट हैं करते ।

हिंदी दिवस

हिन्दुस्तान की शान है हिंदी--
हरेक की कमान है हिंदी ।
बोली, भाषा की विविधता में--
सबको जोड़कर रखती है हिंदी ।
चहुँदिशा में परचम लहरा रही हिंदी--
भटके लोगों को, सुधार रही है हिंदी ।
पत्राचार, पत्रकारिता की अभिव्यक्ति--
सशक्त माध्यम बन उभरी है हिंदी ।
केंद्रीय, राजकीय शासन के कामकाज
व्यवहार में शान से प्रचलित है हिंदी ।
आओ हिंदी का मान बढ़ायेंगे--
साहित्य लेखन में इसे उच्च दर्जा देंगे।
विश्व स्तर पर हिंदी का विस्तार करेंगे-
ऐसा विदेशों में बसे भारतीयों में भी,
इसकी सार्थकता को बतलायेंगे,
सैलानियों में भी, इसका प्रेम जगायेंगे।
साक्षरता हिंदी पठन से लायेंगे--
ऐसा संकल्पित कदम हम उठायेंगे ।

नाम : हिम्मत सिंह अरमो
पिता : स्व. श्री पुनऊ सिंह अरमो
माता जी : स्व. श्रीमति बसमोतिन बाई
जन्मतिथि : 23 जुलाई, 1959
जन्मस्थान : ग्राम-खजरा, पोस्ट सिजोरा (गढ़ी) तह-बैहर जिला-बालाघाट (म.प्र.)
वर्तमान पता : आवास कमाक पाईन फ्लैट 78, द्वितीय तल, ब्लॉक-04,छ.ग. हाउसिंग बोर्ड कालोनी, बोरियाकला, रायपुर (छ.ग.) पिन 492015
मोबाईल : 6264189643, 9425202803
शिक्षा : एम. कॉम 1982, सागर यूनिवर्सिटी सागर म.प्र.
संप्रति : वरिष्ठ व्याख्याता (आधुनिक कार्यालय प्रबंधन) सेवानिवृत 31 जुलाई 2024 तकनीकी शिक्षा (पॉलिटेक्निक संस्था) विभाग, छ.ग. शासन
अभिरूचि : लेखन-पुस्तक, कविता, आलेख एवं काव्यपाठ, काव्य गोष्ठी, साहित्य अध्ययन, समाज सेवा, कैरियर गाइडेंस, मच संचालन, बागवानी आदि।
उपलब्धियाँ : अ. समाचार पत्र, सामयिक/ सामाजिक पत्रिकाओं में कविता/ आलेख/ प्रकाशन एव शोध पत्र का प्रकाशन।

ब. ग्रामीण विकास संबंधित कार्य (उद्यमिता विकास मंत्रालय, भारत सरकार से संबंधित) एवं आदिवासियों के समग्र विकास, उत्थान हेतु सतत् प्रयत्नशील।

स. सामाजिक संगठन में राष्ट्रीय स्तर पर पदाधिकारी एवं अन्य संगठनों में सक्रीय सदस्य के रूप में भागीदारी।

द. छत्तीसगढ़ हिन्दी साहित्य मण्डल का वर्ष 2011 में सकीय सदस्य के रूप में (कार्यकारिणी हेतु) मनोनयन / चयन।

ई. कविता संग्रह की पाँच पुस्तकों का प्रकाशन, सामाजिक स्मारिका का प्रकाशन वर्ष 2023।

सम्मान : अ. तकनीकी पाठ्य पुस्तक पुरस्कार योजना वर्ष 2001-02 में (शीर्षक व्यक्तित्व विकास एवं निखार) संयुक्त लेखन हेतु "AICTE" नई दिल्ली से द्वितीय पुरस्कार, समान राशि एवं स्मृति चिन्ह, प्रमाण पत्र, शाल भेंट कर सम्मनित किया (दिनाँक 25/06/2002) है।

ब. शिक्षा, साहित्य, सामाजिक क्षेत्र में राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न सस्थाओं / संगठनो द्वारा, विभिन्न वर्षो में सम्मानित।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/
978-93-94528-82-6
मूल्य- 200/-
15, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331, मो.- 9009423393, ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com